कल भात आएगा

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का नाटक

चंचल द्वारा चित्रित



मूल्य : रु. 8.00

प्रथम संस्करण : 1988

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली-110 002

टाइपसैटिंग : फोटोटाइप डिवीज़न,
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
एफ-5, सैक्टर-8, नौएडा-201 301

चित्रकार : चंचल

मुद्रक : प्रभात ऑफसेट प्रेस,
दरियागंज; नई दिल्ली-110 002



चारों तरफ़ शून्य और अँधेरा है। रोशनी के एक वृत्त में एक डाक का बंबा है। एक बच्चा उससे सटा सो रहा है। उसके सिरहाने एक टीन का कटोरा है और एक मिट्टी का कुल्हड़। बच्चे की नींद खुलती है। वह भूखा है। कटोरा उठाता है पर उसमें कुछ नहीं है। उसे यूँ ही नाखूनों से खुरचता है, चाटता है। उलटाकर बजाने की कोशिश करता है फिर कटोरे को नचाता है। पहिए की तरह बार-बार चलाता है। ऊब जाता है। कटोरे को उठाकर सिर पर रखता है। कटोरा गिर जाता है। फिर वह उसे उठा बंबे के सिर पर रख देता है। उसे देखकर हँसता है। फिर इधर-उधर देखने लगता है। वह किसी तरह अपनी भूख को भूलना चाहता है और मन बहलाना चाहता है। वह फिर बंबे की ओर देखता है और कहता है :

बच्चा : तुम अच्छे लगते हो।

कटोरे के ऊपर वह कुल्हड़ भी रख देता है। देखता है। फिर दोनों को उतारकर नीचे रख लेता है। वह पहले एक टाँग पर फिर दोनों टाँग पर उछलने की कोशिश करता है। पर एक-दो बार से अधिक नहीं कर पाता। वह शून्य में से कुछ कंकड़ियाँ बीनता है और उन्हें लेकर फिर बंबे से सटकर बैठ जाता है। कंकड़ियों को वह कटोरे में डालता है, बजाता है, फिर पासे की तरह फेंकता है। खुश होने की कोशिश करता है फिर उन्हें उछाल-उछालकर गोटी खेलने लगता है। अचानक बंबे के मुँह से एक हाथ



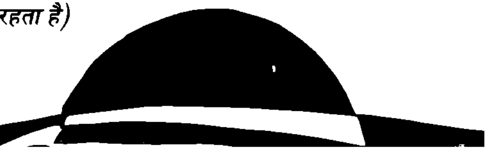
निकलता है। हाथ उछली हुई गोटी को थाम लेता है। बच्चा ऊपर देखता है। हाथ खट-से भीतर चला जाता है। वह देख नहीं पाता। वह दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं सभी गोटियाँ उछालता है और बंबा उसी तरह सबको थामता जाता है। बच्चा हैरत से खड़ा होकर चारों तरफ़ देखता है फिर बैठ जाता है। थोड़ी देर बाद बंबा हाथ निकाल गोटियाँ गिरा देता है। बच्चा उसका हाथ देख लेता है। खुश होकर कहता है :

बच्चा : तुम खेलना चाहते हो ?

(बंबा चुप रहता है)

बच्चा : भूखे हो ?

बंबा : नहीं।



बच्चा : कल मैंने रोटी खाई थी।

बंबा : रोटी!

बच्चा : रोटी बहुत अच्छी होती है। नमक लगाओ और अच्छी हो जाती है। *(बच्चा बंबे की ओर स्नेह से निहारता है)* अब जब रोटी मिलेगी तुझे दूँगा।

(बच्चा बंबे को धीरे-धीरे सहलाता है)

बच्चा : *(पसीजा हुआ है)* तुम कागज खाते हो?

बंबा : मुझे लोग यही देते हैं।

बच्चा : मना कर दिया करो।

बंबा : कैसे? पर मैं खाता नहीं। वे आते हैं पेट काटकर निकाल ले जाते हैं।

बच्चा : पेट काटकर!

बंबा : हाँ, देखो मेरा पेट कटा हुआ है।

बच्चा गौर से देखता है। बंबे के पेट पर ढक्कन है ताला लगा हुआ है। बच्चा उसे टटोलता है फिर अपना पेट भी देखता और टटोलता है।

बच्चा : मेरा पेट देखो, नहीं कटा है।

बंबा : तुम अच्छे लड़के हो।

बच्चा : नहीं, मैं गंदा हूँ। माँ-बाप को मैंने खाया है…

बंबा : कौन कहता है?

बच्चा : सभी।

बंबा : माँ बाप को कोई नहीं खाता।

बच्चा : मैंने खाया है *(कुछ सोचता हुआ)* कैसे खाया होगा?

बंबा : झूठ, कब खाया?

बच्चा : मुझे याद नहीं।

बंबा : फिर तूने नहीं खाया।

बच्चा : *(सोचकर)* मैं बहुत चीजें खा लेता हूँ–पत्ती, घास, फूल…

बंबा : तू मुझे खा सकता है?

बच्चा : नहीं, तू बड़ा है, कड़ा भी है।

बंबा : तेरे माँ-बाप भी बड़े थे और कड़े थे।

बच्चा : तूने उन्हें देखा है?

बंबा : हाँ, जैसे तू बैठा है, वैसे वे भी बैठते थे।

बच्चा : तुझसे खेलते थे?

बंबा : नहीं। यहीं बैठ खाते थे।

बच्चा : भात? मैं भात खाऊँगा। बहुत पहले मैंने भात खाया था। भुजिया भात। बहुत अच्छा था। कभी मिलेगा तुझे दूँगा। ज्यादा मिलेगा तब।

बंबा : तू चिट्ठी लिखकर मुझे दे दे। मैं मँगवा दूँगा।

बच्चा : कौन देगा?

बंबा : जिसे तू लिखेगा।

बच्चा : लिखूँगा…नहीं जानता…तू बता किसे?

बंबा : लिखना जानता है?

बच्चा : जानता हूँ पर कागज़ पर नहीं लिख पाता।

बंबा : फिर किस पर लिखना है?

बच्चा : ज़मीन पर, दीवार पर! सब पर लिख सकता हूँ। देख मेरे पास ये है…

(जेब से कोयला निकालकर दिखाता है, फिर खुश होकर)

बच्चा : तुझ पर लिख दूँ?

(बच्चा बंबे पर एक गोला और नीचे एक चौकोर खाना बनाता है)

बंबा : यह क्या है ?

बच्चा : भात है थाली में।

बंबा : नहीं भात नहीं है।

बच्चा : फिर तू है

मोटा रे मोटा

पहन लँगोटा

बाप तेरा काना

मारेगा सोटा



बच्चा अपनी बनाई आकृति देखकर खुश होकर गाता, बंबे को चिढ़ाता, उसके चारों ओर ताली बजाता घूमता है। बंबा भी अपनी जगह पर बच्चे के साथ धीरे-धीरे घूमता है।

बच्चा : दौड़ो, मुझे पकड़ो। तुम दौड़ते क्यों नहीं?

बंबा : मैं मोटा हूँ, कैसे दौड़ूँ?

(बच्चा हँसता हुआ बैठ जाता है)

बच्चा : मुझे भूख लगी है। मैं एक दिन से ज्यादा भूखा नहीं रह पाता। तू?

बंबा : मुझे भूख नहीं लगती।

बच्चा : तू झूठ बोलता है। जरूर लगती होगी। मुझे लगती है तो तुझे भी लगती होगी।

(बच्चा जैसे अपमानित हो रोआंसा हो जाता है)

बंबा : मैं बड़ा हूँ न! मुझे न धूप लगती है, न सरदी लगती है, न भूख लगती है। मैं बरसात में भी यहीं खड़ा रहता हूँ। पानी भर जाए तो भी खड़ा रहूँगा।

बच्चा : तू झूठ बोलता है।

बंबा : नहीं, तेरे माँ-बाप भी ऐसे ही खड़े रहते थे।

बच्चा : धूप में? सरदी में?

बंबा : हाँ।

बच्चा : पानी में भी?

बंबा : हाँ।

बच्चा : भीगते नहीं थे?

बंबा : भीगते थे।

बच्चा : तू झूठ बोलता है। मुझे तो गरमी लगती है। धूप में मैं नहीं खड़ा

रह पाता। सरदी भी लगती है।

बंबा : तू छोटा है।

बच्चा : बड़ा होकर क्या मैं तेरी तरह हो जाऊँगा?

बंबा : हाँ।

बच्चा : सरदी भी नहीं लगेगी, धूप भी नहीं, भूख भी नहीं?

बंबा : हाँ।

बच्चा : *(ताली बजाकर)* बड़ा मज़ा आएगा। क्या फिर लोग मेरे पेट में भी कागज...

बंबा : कागज नहीं चिट्ठियाँ।

बच्चा : हाँ चिट्ठियाँ डालेंगे और पेट काटकर ले जाएँगे?

बंबा : यह मैं नहीं जानता।

बच्चा : तू तो कहता है तूने मेरे माँ-बाप को देखा है।

बंबा : देखा है। गाँव में पानी जब भरता था वे यहीं आ जाते थे। एक बार तो मेरे ऊपर इतना सामान लाद दिया कि मैं गिरने-गिरने को हो गया।

बच्चा : तू बहुत अच्छा है। तू उन्हें भात मँगवा देता होगा?

बंबा : वो लिखना नहीं जानते थे। यह भी नहीं जानते थे कि किसे लिखें।

बच्चा : मैं तो लिखना जानता हूँ।

बंबा : जानता है, पर वह लिखना नहीं जानता जिससे भात आ जाए।

बच्चा : क्या भात के लिए कुछ और तरह से लिखना पड़ता है?

बंबा : हाँ।

बच्चा : कागज पर?

बंबा : हाँ।



बच्चा कुछ सोचता है। फिर उठ जाता है। प्रकाश के दायरे से निकल अँधेरे में घूमता है। कुछ देर बाद एक कागज लेकर आता है। उस पर कोयले से उसी तरह की आकृति बना बंबे में डाल देता है और खुश होकर गाता है :

कल भात आएगा एक पतीला
गरम-गरम औ गीला-गीला
हम तुम खाएँगे
कौए को खिलाएँगे
गरम-गरम औ गीला-गीला
कल भात आएगा एक पतीला !

गाते-गाते बच्चे की पलक झपकने लगती है। उधर से डाक निकालने के लिए डाकिया आता है। बड़ी-बड़ी मूँछोंवाला, दैत्याकार, भयानक। उसके

जूते खट-खट करते हैं। वह बच्चे को देखकर गुस्से से भर जाता है। उसकी टाँग पकड़कर खींचता है :

डाकिया : साले कमीने यहीं आ मरते हैं।

बार-बार बड़बड़ाता है। फिर ताला खोल चिट्ठियाँ निकालता है। बच्चा घसीटे जाने पर चौंक जाता है। चीखता है, डरकर दुबक जाता है। डाकिये के हाथ में कोयले का रेखांकन आ जाता है। डाकिया उसे देखकर बच्चे से पूछता है :



डाकिया : यह शरारत तूने की है ?

बच्चा घबराकर 'नहीं' सूचक सिर हिलाता है। डाकिया कागज फाड़कर फेंक देता है :

डाकिया : खबरदार जो इसमें कूड़ा-करकट डाला। हड्डी-पसली एक कर दूँगा।

डाकिया थैले में डाक भर, बंबे में ताला लगा चला जाता है। बच्चा उसके जाते ही रोआंसा-सा बंबे के पास खिसक आता है।

बच्चा : *(रोनी आवाज़ में)* अब भात कैसे आएगा ?

बंबा : वह राक्षस है।

बच्चा : उसने मेरी चिट्ठी क्यों फाड़ दी ?

बंबा : वह पढ़ा-लिखा नहीं है। वही पढ़ सकता है जो सिखाया गया है।

बच्चा : उसे किसने सिखाया ?

बंबा : जिनके पास रोटी है, भात है।

बच्चा : वे मुझे क्यों नहीं सिखाते ?

बंबा : डरते होंगे।

बच्चा : मुझसे ?

बंबा : हाँ।

बच्चा : क्यों ?

बंबा : क्योंकि तू कागज को छोड़कर कहीं भी लिख सकता है।

बच्चा : मैं उनकी नाक पर भी लिख सकता हूँ, मुँह पर भी, पेट पर भी, खोपड़े पर भी···

बंबा : *(बात काटकर)* तुझे कोई अच्छा गाना आता है ?

बच्चा : आता है।

बंबा : गाओ। मुझे नींद आ रही है। जब पेट खाली होता है बहुत नींद

आती है ।

बच्चा : *(गा कर)* मैंने कल खाया था
बड़ा मजा आया था

बंबा : यह गाना अच्छा नहीं है ।

बच्चा : मेरा बाप कैसा था ?

बंबा : लोहे का ।

बच्चा : मेरी माँ ?

बंबा : लोहे की ।

(बच्चा सोचने लगता है)

बंबा : दूसरा गाना गा ।

(बच्चा गाना गाता है उदास लोरी की धुन में)

मेरी माँ सो गई है
मेरा बाप खो गया है
घर में डर लगता है
अँधेरा हो गया है ।
ओ परियों की रानी
एक कहानी कहो
कोई न आए जब तक
मेरे साथ रहो ।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
तोड़ के फल मैं लाऊँगा
घोड़े पे बैठ के मैं
तेरे महल में आऊँगा ।
ओ परियों की रानी

एक कहानी कहो
मुझको डर लगता है
मेरे साथ रहो।

अंत तक आते-आते बच्चे की आवाज शिथिल होती जाती है। बंबा सो जाता है।

बच्चा : तुम सो गए। इतनी जल्दी।

बच्चा अपना टाट उठा बंबे पर डाल देता है। जैसे उसे सहेज कर ओढ़ा रहा हो। फिर खुद लेटने की कोशिश करता है। थोड़ी देर में सुबकियाँ भरने लगता है।

बंबा : *(जैसे नींद से चौंक कर जागा हो)* तू रो रहा है?

बच्चा : हाँ, मुझे डर लगता है।

बंबा : डर लगता है? किससे?

बच्चा : उससे जो तेरा पेट काटकर...

बंबा : मेरी आदत पड़ गई है।.

बच्चा : मेरा पेट काट ले तो?

बंबा : तेरे पेट में कुछ है नहीं, खाली है।

(बच्चा कुछ कहता नहीं, सुबकता रहता है)

बंबा : अब चुप कर। रोएगा तो नहीं बोलूँगा।

बच्चा : तू नहीं रोता?

बंबा : नहीं, तेरे माँ-बाप भी नहीं रोते थे।

बच्चा : तब मैं भी नहीं रोऊँगा *(सुबकते हुए कहता है)*

बंबा : *(बच्चे का मन बहलाने के लिए)* एक बार किसी शरारती ने मेरे पेट में मेंढक डाल दिया। वह दिन-भर मेरे पेट में उछलता रहा। मैं छटपटाता रहा। पर रोया नहीं।



बच्चा : *(खुश होकर)* वह बड़ा था या छोटा ?

बंबा : कौन ? मेंढक या शरारती ?

बच्चा : मेंढक ।

बंबा : बड़ा था ।

बच्चा : जब वह उछलता था, तुम भी उछलते होओगे ?

बंबा : *(उछलकर दिखाते हुए)* हाँ, इस तरह ।
(उसे उछलते देख बच्चा खूब हँसता है)

बच्चा : फिर मेंढक निकला कैसे ?

बंबा : जब वह पेट काटनेवाला राक्षस आया तब ढक्कन खुलते ही मेंढक ने उसके मुँह पर छलाँग मारी—वह चीखकर भागा ।

बच्चा : *(ताली बजाकर हँसता हुआ)* बड़ा मजा आया होगा।

मेंढक रे मेंढक
ताल से निकल
टर टर करके
ज़ोर से उछल

बंबा : बहुत मजा आया। मैं अपनी सारी तकलीफ भूल गया।

बच्चा : वह शरारती छोटा था या बड़ा?

बंबा : बड़ा था। तेरा बाप भी उससे डरता था।

बच्चा : तुम भी उससे डरते हो?

बंबा : नहीं, मुझे उस पर गुस्सा आता है।

बच्चा : वह मेंढक कहाँ से लाया होगा?

बंबा : मालूम नहीं।

बच्चा : मुझे एक मेंढक चाहिए।

बंबा : तुझे हर चीज़ चाहिए। क्या करेगा तू उसका?

बच्चा : मैं उसे राक्षस के मुँह पर उछालूँगा।

बंबा : और वह उछलवा लेगा। पकड़कर पीटेगा।

बच्चा : मैं भाग जाऊँगा।

बंबा : जैसे वह पकड़ नहीं पाएगा। उसके पास बहुत नौकर-चाकर हैं।

बच्चा : मैं छिप जाऊँगा।

बंबा : सब ढूँढ निकालेंगे।

बच्चा : मैं... मैं... *(सोचने लगता है)*

बंबा : तू उसका कुछ नहीं कर सकता।

बच्चा : क्यों?

बंबा : वह बड़ा है।

बच्चा : उसके पास भात होगा ?

बंबा : उसके पास सब है।

बच्चा : वह मुझे देगा ?

बंबा : नहीं।

बच्चा : बड़ी भूख लगी है। मुझे भात चाहिए।

बंबा : यहाँ से चला जा।

बच्चा : तुम भी यही कहते हो *(रोने लगता है)*

(बंबा कुछ जवाब नहीं दे पाता चुप रहता है)

बच्चा : *(सुबकते हुए)* कहाँ ?

बंबा : क्या बताऊँ ? मैं खुद कभी कहीं नहीं गया।

बच्चा : चिट्ठी कैसे भेजते हो फिर ?

बंबा : मैं कहाँ भेजता हूँ। वह मुझे छूकर जादू से चली जाती है। तेरे माँ-बाप भी कभी कहीं नहीं गए। उनको भी छूकर हर चीज़ चली जाती थी।

बच्चा : फिर मैं भी नहीं जाऊँगा।

बंबा : क्या करेगा यहाँ ?

बच्चा : जो तू कर रहा है।

बंबा : मैं जमीन में गड़ा हुआ हूँ।

बच्चा : मैं तुझे उखाड़ दूँगा।

बंबा : बहुत गहरे गड़ा हूँ। तेरा बाप भी बहुत गहरे गड़ा था।

बच्चा : मैं उखाड़ सकता हूँ।

बच्चा बंबे को उखाड़ने के लिए हर तरह से ज़ोर लगाता है, पर वह उखड़ता नहीं। इसी बीच डाकिया आ जाता है। इस बार वह और खूँख्वार लगता है।

डाकिया : *(गरज कर)* क्या कर रहा है ? ठहर जा… अभी…

बच्चा भागता है । सीटियाँ चारों ओर बजने लगती हैं । उनकी संख्या बढ़ने लगती है । डाकिया बच्चे को पकड़ने के लिए अँधेरे में दौड़ता है और फिर पकड़ लेता है ।

डाकिया : इसे क्यों उखाड़ रहा था ?

बच्चा जवाब नहीं देता । वह क्रोध, अपमान और पराजय से भरा हुआ है । डाकिया बच्चे का हाथ रस्सी से बाँध देता है और चिट्ठियाँ निकाल थैले में डाल, ताला लगा चला जाता है। जाते-जाते गरजकर वह बच्चे को धमकाता है ।

डाकिया : साला ! इस बार उखाड़ने की कोशिश की तो जान से मार दूँगा ।

डाकिए के जाने के बाद बच्चा कैदी-सा बँधे हाथ लिए बंबे के पास आ बैठता



है। वह कुछ बोलता नहीं।

बंबा : तेरे बाप को भी इसी तरह बाँधकर डाल दिया था। उसे मार भी पड़ी थी।

बच्चा : मार से मैं नहीं डरता मैंने बहुत मार खाई है।
(बंबा चुप रहता है)

बच्चा : तूने मार खाई है?

बंबा : बहुत। मेरी एक-एक नस पर हथौड़े पड़े हैं। ठोंक-ठोंककर उमड़-दुमड़कर। फिर लाल रंग पोत दिया। *(रुककर)* तेरे माँ-बाप का भी यही हाल हुआ था। उनका भी रंग लाल हो गया था।

बच्चा : बहुत पिटने पर मैं भी हो जाता हूँ। उसे खून कहते हैं।

बंबा : खून?

बच्चा : हाँ, मैं नींद में भी पिटता हूँ।

बंबा : मैं भी हर समय आवाज सुनता रहता हूँ जिस्म पर हथौड़ों की।

बच्चा : *(घबराकर)* अब क्या करूँ? हाथ कैसे खुलेंगे?

बंबा : मुझ पर रगड़। शायद कट जाएँ। मैं कड़ा हूँ।

बच्चा बंबे के ऊपर पतले सिरे से हाथ में बँधी रस्सी रगड़ता है। वह कट जाती है। बच्चा मुक्त हो जाता है। कटी हुई रस्सी बंबे में डाल वह बंबे से लिपट जाता है।

बच्चा : तुम बहुत प्यारे हो।

बच्चा उस पर प्रेम से इस तरह अपना मुँह सटा देता है जैसे अपने माँ-बाप से लिपटा हो।

बच्चा : मैं फिर जोर लगाता हूँ। तू भी लगा।

बंबा : मैंने कहा न तू मुझे नहीं उखाड़ सकता।

बच्चा : *(विश्वास के साथ)* उखाड़ सकता हूँ।

बंबा : वह फिर आ जाएगा।

बच्चा : आ जाए।

बंबा : इस बार तुझे जान से मार देगा।

बच्चा : हम दोनों भाग जाएँगे।

बंबा : तू भूखा है नहीं उखाड़ पाएगा। मैं भी भूखा हूँ जोर नहीं लगता।

बच्चा : मैं उखाड़ूँगा।

बच्चा जोर लगाता है पर बंबा टस से मस नहीं होता। वह हाँफ जाता है। पसीने से तर हो जाता है। फिर धम्म-से बैठ जाता है।

***बच्चा** : सच में भूखा हूँ (मायूसी/रोआंसी आवाज में)* मुझे भात चाहिए।

बंबा : चुपचाप बैठ। तेरा बाप भी ऐसे ही बैठा रहता था। माँ भी।

बच्चा : उन्होंने तुझे नहीं उखाड़ा?

बंबा : नहीं।

बच्चा : तूने उन्हें मना किया होगा?

बंबा : नहीं।

बच्चा : फिर मुझे क्यों मना करता है?

बंबा : तेरे हाथ-पैर छोटे हैं।

बच्चा : उनके?

बंबा : बहुत बड़े-बड़े थे।

बच्चा : कितने बड़े?

बंबा : पेड़ जितने।

बच्चा : पेट?

बंबा : तुझसे भी छोटा।

बच्चा : कैसे लगते होंगे *(हँसता है)*



(बंबा भी हँसता है)

बच्चा : कैसे खाते होंगे?

बंबा : दूसरे उनके हाथ से उठा उन्हें खिला देते थे।

बच्चा बार-बार अपना हाथ अपने मुँह के पास ले जाता है जैसे यकीन करना चाहता हो कहीं उसके हाथ बड़े तो नहीं हो गए।

बच्चा : मेरे हाथ तो बड़े नहीं हैं।

बंबा : बड़ा होगा, तो तेरे हाथ भी उनके जैसे बड़े हो जाएँगे।

बच्चा : *(हाथ घुमाकर देखता है)* फिर मैं उन्हें मुँह तक कैसे लाऊँगा?

बंबा : दूसरे तेरे हाथ से उठा तुझे खिलाएँगे।

बच्चा : *(घबराकर)* मेरा भात भी?

बंबा : सबकुछ।

बच्चा : *(परेशान होकर)* मैं उन्हें काट नहीं सकता?

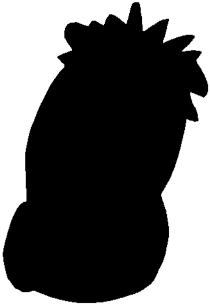
बंबा : अपने हाथ-पैर कोई काटता है। काटेगा तो मेरी तरह हो जाएगा। मुँह खोले बैठा रहेगा।

बच्चा : जैसे तू?

बंबा : हाँ।

(बंबा गाता है)

मैं हूँ भूखा बड़ा
कोने में खड़ा
दिन-रात खुला मुँह रखता हूँ
मेरे हाथ नहीं
मेरे पैर नहीं
जो दे दो खुला मुँह रखता हूँ
मेरे दाँत नहीं



मेरी आँत नहीं
फिर भी यह खुला मुँह रखता हूँ

बच्चा : मैं तुझे उखाड़ूँगा फिर तेरे हाथ लगा दूँगा।

बंबा : फिर जिद करने लगा।

बच्चा : *(समझाता है)* मैं यह जमीन खोदूँगा।

बंबा : कौन-सी जमीन ?

बच्चा : *(नीचे की जमीन दिखाते हुए)* जिसमें तू गड़ा है।

बंबा : बहुत समय लगेगा। तेरे पास खोदने का हथियार है ?

बच्चा : नहीं।

बंबा : फिर क्या नाखून से खोदेगा ?

बच्चा : मैं हथियार बना लूँगा। एक नुकीला पत्थर मैंने देखा है।

बंबा : यह जमीन सख्त है पत्थर से नहीं खुदेगी। हथौड़ा, छेनी, कुदाल चाहिए।

बच्चा : ये कहाँ मिलते हैं ?

बंबा : मैं नहीं जानता।

बच्चा : उस राक्षस के पास हैं ?

बंबा : जरूर होंगे। नहीं तो वह मुझे गाड़ता कैसे ?

बच्चा : गाड़ने में उसे बहुत मेहनत पड़ी थी ?

बंबा : उखाड़ने में तुझे ज्यादा पड़ेगी। गाड़ने में उतनी नहीं पड़ती।

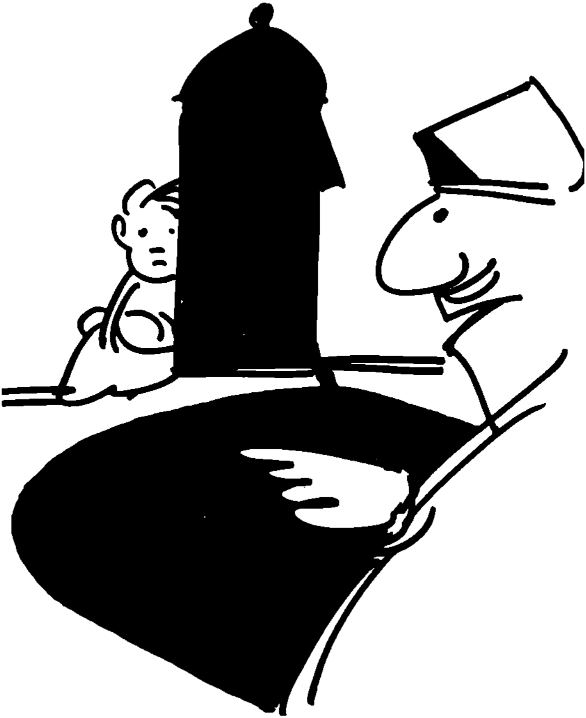
बच्चा : *(जमीन को नाखूनों से खरोंचता है)* मुझे बहुत भूख लगी है।

बंबा : तू पहले पेट भर।

बच्चा : कहाँ से ?

बंबा : गाँव में जा।

बच्चा : वहाँ कोई नहीं सब भाग गए।



बंबा : क्यों ?

बच्चा : खाना नहीं था। मुझे भात चाहिए।

बंबा : फिर तुझे कल रोटी कहाँ से मिली ?

बच्चा : नहीं मिली थी।

बंबा : तू झूठ बोल रहा था ?

बच्चा : हाँ, खुश हो रहा था ।

बंबा : फिर तूने कल क्या खाया ?

बच्चा : कहा ना, मैं सब खा लेता हूँ । फूल, पत्ती, घास ।

बंबा : फिर जाकर खा आ ।

बच्चा : अब वह भी नहीं है ।

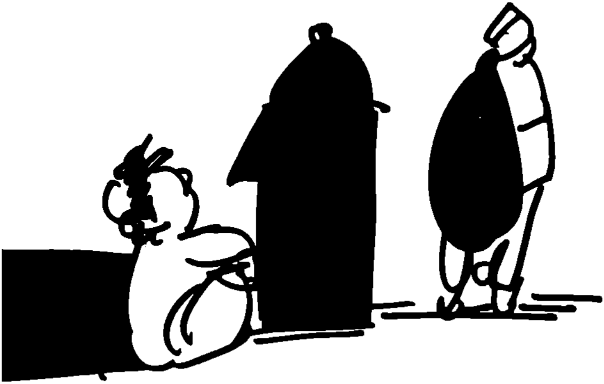
(बंबा चुप रह जाता है)

बच्चा : मैं फिर चिट्ठी लिखूँ ?

बंबा : वह राक्षस फिर डाँटेगा ।

बच्चा : मैं चिट्ठी नहीं लिख सकता, तुझे उखाड़ नहीं सकता





मुझे भात चाहिए।

बंबा : चला जा।

बच्चा : कहाँ जाऊँ। अकेले डर लगता है।

बंबा : फिर आ। मेरी तरह मुँह खोलकर खड़ा हो जा।

बच्चा उठता है। कुछ देर मुँह खोलकर बंबे के बगल में खड़ा हो जाता है बंबे जैसा।

बंबा : कितना अच्छा लग रहा है।

बच्चा : मेरा मुँह दर्द करता है।

बंबा : धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी। तेरे माँ-बाप भी इसी तरह...

बच्चा : मैं कहता हूँ मेरा मुँह दर्द करता है।

बच्चा बार-बार यह वाक्य दोहराता है। वह मुँह खोलता है फिर बंद करता है, फिर खोलता है फिर बंद करता है।

बंबा : कुछ दिनों बाद नहीं करेगा।

बच्चा : पर अभी तो करता है।

बंबा : आँखें बंद कर ले।

बच्चा : *(आँखें बंद कर लेता है)* फिर?





बंबा : कान में उँगली लगा ले।

बच्चा : क्यों? *(कान में उँगली लगा लेता है)*

बंबा : जब आँख-कान बंद हों तब खुला मुँह दर्द नहीं करता जैसे मेरा। तेरे माँ-बाप का भी नहीं करता था।

बच्चा मुँह खोले, आँख बंद किए, कान में उँगली डाले बंबे की तरह खड़ा हो जाता है। डाकिया आता है। इस बार वह और खूँख्वार है। बच्चा उसका आना जान नहीं पाता। डाकिया उसे इस तरह खड़ा देख गुस्से में भर जाता

है। उसे लगता है वह उसे चिढ़ा रहा है।

डाकिया : *(स्वगत)* यह साला मेरे पीछे पड़ा है। इसके मुँह में मिट्टी···

वह जमीन से मिट्टी उठाकर उसके मुँह में ठूँस देता है। बच्चा उबकाता हुआ भागता है

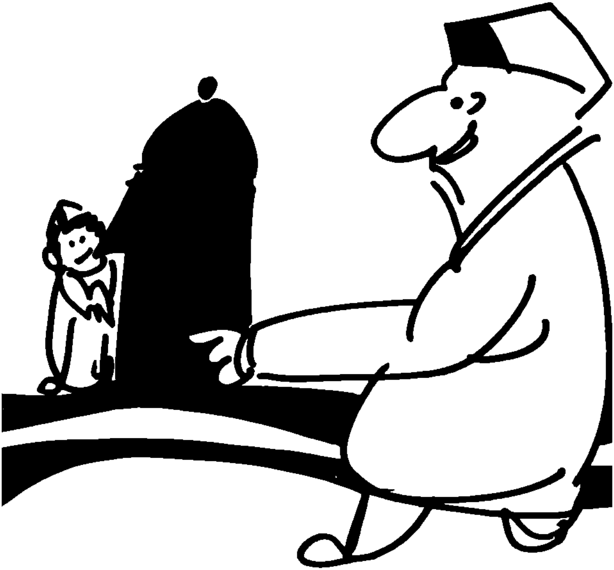
डाकिया : इस तरह क्यों खड़ा था ?

बच्चा : मैं बंबा बना था।

डाकिया : या मुझे चिढ़ा रहा था ?

बच्चा : नहीं तो *(कहते हुए हट जाता है)*





(डाकिया बंबा खोलता है और चिल्ला उठता है)

डाकिया : साँप-साँप ।

(डाकिया दौड़कर बच्चे को पकड़ लेता है)

डाकिया : हरामी ! साफ-साफ बता तू चाहता क्या है ? पहले तूने गंदे परचे डाले, फिर तोड़-फोड़ की, उसे उखाड़ने लगा । अब तू उसे चिढ़ा रहा है । उसमें जहरीला साँप डाल दिया है । तुझे बंबे से क्या दुश्मनी है ? बोल क्या चाहता है तू ?

बच्चा : *(साहस करके)* भात ।

डाकिया : *(क्रोध में)* भात या लात ?

डाकिया कसकर बूट से प्रहार करता है । बच्चा गिर जाता है । डाकिया बंबे के बक्से में डरता, काँपता फिर देखता है । फिर हिम्मत करके अपनी लाठी से कुरेदता है । साँप की जगह रस्सी लाठी में फँसी आ जाती है । वह लाठी उठाए, लाठी में फँसी रस्सी को देखता है फिर भय त्याग आश्वस्त हो पूछता है :

डाकिया : *यह रस्सी तूने इसमें क्यों डाली ?*

बच्चा : *(अधमरी आवाज में)* तुम्हारी थी ।

डाकिया : नहीं, तू मुझे डराना चाहता था । मैं डरपोक नहीं हूँ, मैं डरपोक नहीं हूँ, मैं डरपोक नहीं हूँ, समझा ?

डाकिया ताला लगा थैला उठा जाने लगता है और बच्चे से कहता जाता है

डाकिया : इस बार बंबे को हाथ लगाया तो जान से मार दूँगा ।

डाकिये के प्रस्थान करते ही बच्चा कराहता हुआ उठकर फिर बंबे के पास आ जाता है और उससे चिपटकर खड़े रहने की कोशिश करता है पर धम्म से बैठ जाता है

बच्चा : यह डरपोक है ।

बंबा : बहुत चोट लगी है ? राक्षस !

बच्चा : नहीं मार सहने की मेरी आदत है ।

बंबा : *(उसे खुश करने के लिए)* जैसे मेरी सरदी-गरमी सहने की ?

बच्चा : *(मुस्कराने की कोशिश करता है)*

बंबा : तू लेट जा, चोट लगी है ।

बच्चा : चोट नहीं, भूख लगी है । मुझे भात चाहिए ।

बंबा : तो जाकर ढूँढ ।

बच्चा : मैं अकेले नहीं जाऊँगा । तू भी चल ।

बंबा : मैं कैसे जा सकता हूँ? तू जा। तेरे माँ-बाप भी अकेले गए थे।

बच्चा : मैं अकेले नहीं जाऊँगा।

बच्चा अँधेरे वृत्त में जाता है। दो पत्थरों को ले आता है। उनके सहारे वह बंबे के नीचे की जमीन खोदने लगता है। वह एक पत्थर रखकर दूसरा पत्थर उस पर पटकता है और मिट्टी हटाता है। खट-खट की एक लय में बँधी आवाज आती है।वह इसी तरह जमीन खोदता जाता है।

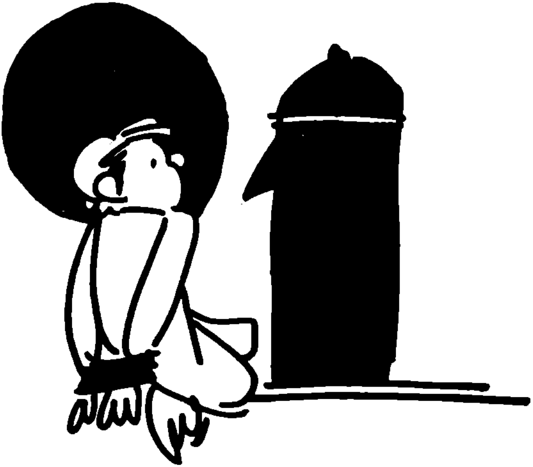
बंबा : तू थक जाएगा।

बच्चा : *(चुप रहता है)*

बंबा : जमीन बहुत सख्त है।

बच्चा : *(चुप, प्रहार करता जाता है)*

बंबा : तू भूखा है, तुझमें ताकत नहीं है।





बच्चा : *(चुप उसी प्र*

बंबा : मैं बहुत गहरे

बच्चा : *(खट-खट प्र*

बंबा : अभी वह फि

बच्चा : *(खट-खट प्र*

बंबा : इस बार वह

बच्चा : *(चुप प्रहार*

बंबा : मैं कहता हूँ

बच्चा : *(सिर झुका*

बंबा : मैं मना कर

बच्चा : *(चुपचाप प्र*

बंबा : मेरी बात तू नहीं सुनेगा ?

बच्चा : *(प्रहार करता जाता है खट-खट की लय बँधी है)*

बंबा : *(चीखकर)* बहुत हो गया अब बस कर ।

बच्चा : *(जैसे सुन नहीं रहा हो, प्रहार करता जाता है)*

बंबा : जिद्दी, क्यों जान देता है ?

बच्चा : *(पूर्ववत प्रहार करता जाता है ।)*

बंबा : *(गुस्से से)* मैं तुझसे नफरत *(फिर नरम पड़कर)* रहने दे बच्चे ।

बच्चा : *(खट-खट प्रहार करता जाता है)*

बंबा : तेरे हथियार बहुत छोटे हैं । जमीन बहुत सख्त है । तू कुछ नहीं कर पाएगा सिवा जान देने के ।

बच्चा : *(सुनता नहीं, प्रहार करता जाता है)*

बंबा : मेरी बात मान जा । मैं तेरी लाश नहीं देखना चाहता *(कुछ रुककर)* तेरे माँ-बाप की भी नहीं चाहता था···

बच्चा : *(यंत्रवत प्रहार करता जाता है, वह एक तरफ से हटकर दूसरी तरफ की मिट्टी खोदने लगता है । बंबा उसे समझाने के लिए घूमता है)*

बंबा : तू कुछ भी कर मैं नहीं हट पाऊँगा ।

(बच्चा घूमकर खोदता है । बंबा घूम-घूमकर समझाता है ।)

बंबा : तू रुकेगा नहीं *(चीखकर)*?

बच्चा : नहीं *(आहिस्ता से संकल्प भरी आवाज में)*

बंबा : भात इस तरह कैसे मिलेगा ?

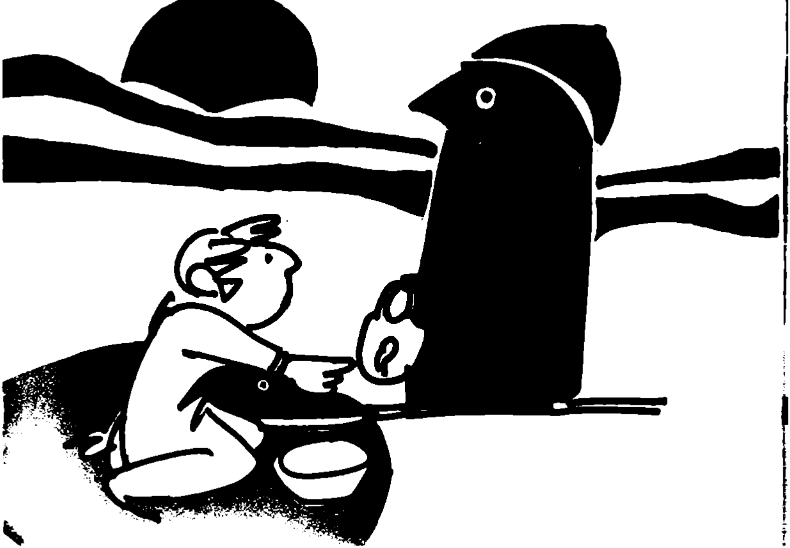
बच्चा : मिलेगा । तू जानता है । मैं अकेला हूँ ।

(वह खट-खट पूर्ववत खोदता रहता है)

बंबा : *(हारकर)* नहीं मानेगा ?

बच्चा : अब नहीं।

अचानक फौजी कवायद सुनाई देती है। डाकिया प्रवेश करता है। वह दौड़कर बच्चे को पकड़ता है। गोली चलने की आवाज आती है। चारों तरफ से आने लगती है। और बंबा अपनी जगह घूमने लगता है जैसे उनका सामना कर रहा हो। डाकिया बच्चे को खींचकर अँधेरे में फेंक देता है और बिना डाक निकाले भागता हुआ जाता है जैसे युद्ध हो रहा हो। फिर शांति छा जाती है। बच्चे की कराह अँधेरे से आती है। बंबा उसे सुन विचलित होता है और उखड़ने के लिए अंतिम संघर्ष करता है। कराह धीमी होती जाती है। बंबा उखड़कर अँधेरे में पड़े बच्चे की ओर भागता है। रोशनी का



वृत उसके साथ चलता है। बंबा पास पहुँच बच्चे को
बच्चा हँसता है।

बच्चा : मैं जानता था…

बंबा : तुम जिंदा हो?

बच्चा : मुझे भात चाहिए।

बंबा : चलो।

बंबा बच्चा साथ साथ मंच की परिक्रमा करते हैं। प्र
साथ है। वे गाते हुए प्रस्थान करते हैं

कल भात आएगा एक पतीला
गरम गरम औ गीला-गीला
हम तुम खाएँगे
कौए को खिलाएँगे
गरम-गरम और गीला-गीला
कल भात आएगा एक पतीला

अंत में दोनों एक जैसे दीखने लगते हैं।